International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(I), April- June, 2026, pp. 182-186

शेखावाटी क्षेत्र के जाट समुदाय की पारम्परिक वेशभूषा

प्रिंयका चौधरी[1*] | सुमन पंत[2]

[1]शोध छात्रा, गृहविज्ञान, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशिका, गृहविज्ञान, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान।

*Corresponding Author: pc271996@gmail.com

Citation: चौधरी, प्रियंका एवं पंत, सुमन (2026). शेखावाटी क्षेत्र के जाट समुदाय की पारम्परिक वेशभूषा. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 182–186. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(I).9111

सार

प्रत्येक क्षेत्र की वेशभूषा वहाँ के पर्यावरण, संस्कृति एवं उपलब्ध ससांधनों से प्रभावित होती है। वेशभूषा व्यक्ति का धर्म, लिंग, समुदाय, पेशा और आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र की जाट महिलाओं की वेशभूषा में राजस्थान के अन्य क्षेत्रो की तुलना में भिन्नता देखने को मिलती हैं। वर्तमान समय में जहाँ सभी क्षेत्रों में परिवर्तन तेजी से हो रहा है वही जाट समुदाय की वेशभूषा में भी परिवर्तन देखा गया है। अतः इस शोध पत्र में शेखावटी क्षेत्र के जाट समुदाय की वेशभूषाऔर आभूषणों का दस्तावेजीकरण करने की कोशिश की जा रही हैं। पारम्परिक वेशभूषा को आज की पीढ़ी ने पहनना कम कर दिया है। शहरीकरण, आधुनिकरण, सोशल मीडिया, शिक्षा, पेशा और आर्थिक स्थिति इस परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं। जिससे इनकी सदियों पुरानी वेराभूषा के अस्तित्व को खतरा हो रहा है। अतः इस शोध में सांस्कृतिक विरासत के सरंक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

शब्दकोशः *जाट, शेखावाटी पारम्परिक वेशभूषा, आभूषण, जाट समुदाय, दस्तावेजीकरण।*

प्रस्तावना

वस्त्र मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं' (रोटी, कपड़ा और मकान) में से एकप्रमुख बुनियादी आवश्यकताहै। यह संस्कृति की पहचान का मुख्य भाग है। पारम्परिक वेशभूषा को प्राचीन वस्त्रों व आभूषणों के संग्रहणके रूप में समझा जा सकता है। भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी अलग वेशभूषा है जो उस राज्य की सस्कृति को दर्शाती है। राजस्थान की भौगोलिक विविधता में राजस्थान के जनजातीय व कृषक समुदायो, विशेषकर जाट समुदाय की वेशभूषा को क्षेत्रानुसार अलग – अलग रूपों में विकसित किया है। शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाली जलवायु, आर्थिक परिस्थितियों और भू– प्राकृतिक तत्व जाट वेशभूषा के स्वरूप, रंग, बनावट और उपयोगिता को प्रभावित करते हैं।इस प्रकार राजस्थान की भौगोलिक सीमाएँ और प्राकृतिक परिवेश राज्य की पारम्परिक लोक परिधान परम्पराओं कोसमझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

जाटो की उत्पति

डॉ. के. आर.कानूनगों के अनुसार जाट व्यक्तियों के शरीर की बनावट, उनका चरित्र, भाषा, जीवन मूल्य तथा सामाजिक सस्थानों में प्राचीन वैदिक आर्यो की एक स्पष्ट छाप नजर आती है। ठाकुर देशराज ने भी ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार जाटो को विशुद्ध आर्यबताया है।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

उद्देश्य

- शेखावाटी क्षेत्र के जाट समुदाय की वेशभूषा का दस्तावेजीकरण करना।
- शेखावाटी क्षेत्र के जाट समुदाय की पारम्परिक वेशभूषा में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा से पता चलता है कि शोधकर्ताओं ने अलग–अलग समुदायों की वेशभूषाओं पर काफी अध्ययन किया है लेकिन राजस्थान के जाट समुदाय की वेशभूषा पर वर्तमान में कोई अध्ययन उपलब्ध नहीं है।

- सूद और पतं (2020) के शोध पत्र "साड़ी ब्लाउज पर हिन्दी सिनेमा का प्रभाव" में बताया गया है कि बॉलिवुड ने भारतीय महिलाओं' के फैशन पर मुख्य प्रभाव डाला। वर्षों से बॉलिवुड अभिनेत्रियों द्वारा पहने जाने वाले ब्लाउज के डिजाइन आम लोगो तक पहुंचते हैं। बॉलिवुड और फैशन के मध्य बहुत गहरे सम्बन्धविद्यमान हैं, जो भारत की सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यताओं और मूल्यों को समझने का एक जरिया है।फैशन डिजाइनरो द्वारा करवाए गए रैंप और टेलीविजन, फैशन को आम लोगों तक पहुंचाने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। प्रसिद्व टेलीविजन हस्तियो द्वारा पहने वाले साडी ब्लाउज के डिजाइनो को समाज के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो के लोगो द्वारा आसानी से अपनाया जाता है।
- सिन्हा (2025) ने "वेशभूषा और आभूषणों में सांस्कृतिक समानताएँः भारतीय कालबेलिया और रोमा समुदाय का तुलनात्मक अध्ययन"किया है।
- विवेक (1991) के अनुसार हरियाणा के बिश्नोई समुदाय की वेशभूषा में परिवर्तन पर अध्ययन किया गया। जिसमें सिरसा जिले के दो गाँव और हिसार जिले के दो गाँव चुने गए और तीन पीढ़ियों से चले आ रहे दस–दस परिवारों को चुना गया। जिसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए 120–120 जवाब देने वालों का सैंपल शामिल था। महंगे और असुविधाजनक कपड़ों की जगह रेडीमेड कपड़ों ने ले ली जो आसानी से उपलब्ध हो जाते थे।
- कौर और अग्रवाल (2019)यह शोध साड़ी के इतिहास, उसकी पहनने की शैलियों और डिजाइनों, उन पर प्रभाव डालने वाले तत्वों तथा वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करता है। भारतीय साड़ी जो भारतीय परम्परा का प्रतीक मानी जाती है, वस्त्रों के सबसे प्राचीन रूपों में से एक है और इसके पीछे एक लंबा ऐतिहासिक विकास जुड़ा हुआ है। इसमें पारंपरिक भारतीय साड़ी की ड्रेपिंग शैलियों और समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय फैशन डिजाइनरों के निर्माण के बीच के संबंधों को भी स्पष्ट किया गया है, जो वर्षों में विकसित हुए हैं। पारंपरिक साड़ियों में दिखाई देने वाली ड्रेप्स और डिजाइनों के साथ पश्चिमी डिजाइनों का तुलनात्मक समन्वय किया गया है। भविष्य की तीव्र आर्थिक प्रगति, तकनीकी विकास का उभरते डिजाइनों पर प्रभाव तथा अन्तर्राष्ट्रीय फैशन जगत में साड़ी की बढ़ती लोकप्रियता और डिजाइनरों पर उसके प्रभाव का वर्णन किया गया है।

कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में उद्देश्य प्राप्त करने के लिए गुणात्मक और तुलनात्मक शोध पद्वति प्रयोग में ली गई है और जानकारी एकत्र करने के लिए सुविधाजनक नमूनाकरण तकनीक व साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। अर्द्व संरचित और खुले प्रकार की साक्षात्कार अनुसूची तैयार की गई। यह अध्ययन राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में किया गया। द्वितीयक जानकारी प्रामाणिक पुस्तको अखबार, पत्र–पत्रिकाओं से एकत्र की गई।

परिणाम और चर्चा

शेखावाटी के जाट समुदाय की वेशभूषा

शेखावाटी का जाट समुदाय अपनी विशिष्ट परम्पराओं और रहन–सहन के लिए जाना जाता है, जिसमें उनकी वेशभूषा का प्रमुख स्थान है। पारम्परिक रूप से जाट महिलाओं की वेशभूषा में घाघरा चोली और ओढनी का प्रमुख स्थान रहा है। जबकि पुरुषों की वेशभूषा में धोती, कुर्ता और पगडी (फेंटा) का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

महिलाओं की वेशभूषा

- **ओढ़नी**

महिलाओ की वेशभूषा में ओढ़नी का विशेष स्थान है। ओढनी एक चोकोर (चारों किनारे बराबर) 2–2 मीटर का एक कपडा होता है जिससे महिलाएँ अपने सिर को ढकती है। यह बडो के प्रति सम्मान का प्रतीक है। शेखावाटी क्षेत्र में महिलाएँ अपनी स्थानीय भाषा में ओढ़नी को "चालका" कहती हैं। इस क्षेत्र में कईप्रकार की ओढ़नीयाँ होती है जैसे चुनंडी, पिला, पोमचा,एवं चन्द्रकला आदि । इस क्षेत्र की चुनंडी काफी अलग–अलग तरीको से बनी होती है जो इसे राजस्थान के अन्य क्षेत्रा से अलग दिखाती है। इन चुनंडी में मोर, चिडिया, चाँद (प्राकृतिक डिजाइनों) का प्रयोग अधिक किया जाता हैं। ओढ़नी महिलाओं के जीवन के अलग–अलग पड़ावो को दर्शाती हैं। विवाह के अवसर पर लाल चुनंड़ी का काफी महत्त्व है। वहि महिला के द्वारा पुत्र के जन्म पर उसके भाई या पितृ पक्ष की तरफ से पिला की ओढ़नी लाई जाती है, और पुत्री के जन्म पर पोमचा लाया जाता है। पिला एक पिले रंग की ओढ़नी होती है जिसके किनारो पर लाल रंग की बंधेज होती है, और बिच में लाल रंग का एक गोल चाँद बना रहता है। पोमचा में पिले रंग के स्थान पर केसरिया रंग का प्रयोग किया जाता है। इसे सजाने के लिए पारम्परिक महिलाएँ अपने हाथो से गोटेकी पत्तिया बनाकर लगाती थी। जिसे 'कच्ची गोटा–पत्ती'कहा जाता था और ओढ़नी के चारो तरफ गोटा लगाया जाता था।

- **चोली**

शेखावाटी क्षेत्र में जाट महिलाऍ शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए चोली पहना करती हैं। यह वर्तमान ब्लाउज ही होता हैं। परन्तु इसकी लम्बाई ब्लाउज से थोड़ी ज्यादा होती हैं। यह चोली सामने की तरफ से ओढ़नी से ढकी रहती है।

- **घाघरा**

वस्त्र घाघरा 4–5 मीटर कपड़े का सिला हुआ वस्त्र होता है जिसकी लम्बाई टखनो से निचे तक होती है और कमर पर एक बेल्ट के ऊपर कलीया जोड़कर बनाया जाता है। शेखावारी क्षेत्र में ओढ़नी को इस प्रकार से ओढ़ा जाता है कि उसका एक पल्ला तो घाघरे, में बाये हाथ की तरफ सेटांगा जाता है और दूसरा पल्ला सामने की तरफ चोली में पिन की सहायता से टांगा जाता हैं। यह सामने का पल्ला इतना लम्बा होता है कि चोली के साथ घाघरे को भी सामने से पूरा ढक लेता है।

अतः शेखावारी क्षेत्र में चोली व घाघरा केवल एक तरफ से ही दिखाई देता है दूसरी तरफ ओढ़नी के द्वाराढ़का रहता है।

महिलाओं के आभूषण

क.स.	शरीर का अंग	आभूषण
1	सिर के आभूषण	बोरला, मांगटिका, रखड़ी, शिशफूल
2	कान के आभूषण	सुमकी, पत्ती–सुरलिया, सुई धागा
3	गले के आभूषण	कण्ठी, (घूंघरू वाला), मंगलसूत्र, हम्मेल (सोने के 10 सिक्के लगे होते हैं), टेवटा, टेवटी, बादलिया, लोकिट, गलसरी (गलपटिया)

4	नाक के आभूषण	भोगली', कांटा, बाली, नथ
5	कमर के आभूषण	तागड़ी, सटका
6	हाथ के आभूषण	चूडा, पोंची, बगंडी, हथफूल
7	बाजू के आभूषण	बाजूबंध
8	अंगुलियों के आभूषण	अंगुठी
9	पैरों के आभूषण	पायल, कड़ी छेलकड़ा (3 का सेट), पेंजणी,

- **जुतियॉ**

पैरो में चमड़े की जुतियाँ पहनी जाती थी जिन्हें "मोजडी" कहा जाता था।

चित्र–1 गलसरी

चित्र–2 कड़ला

चित्र–3 राखड़ी

चित्र–4 मुर्की

चित्र–5 नथ

चित्र–6 हमेल

चित्र–7 पुच

चित्र–8कण्ठी

चित्र–9 टेवटा

चित्र–10 तागड़ी

चित्र–11 टेवटी

चित्र–12 मटरमाला

चित्र–13 जाट महिलाओं की वेशभूषा

चित्र–14 जाट पुरूषो की वेशभूषा

पुरुषो की वेशभूषा

- **पगड़ी (फेंटा)**

पगड़ी 8–9 मीटर लम्बा एक कपड़ा होता है जो शेखावारी क्षेत्र में पारम्परिक पुरुष पहना करते थे। वर्तमान में पगडी का प्रयोग केवल अवसरो तक ही सिमित रह गया है। पगड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ–साथ जाति की भी पहचान करवाती है। शेखावारी में पुरुष शुभ अवसरो पर पचरंगी (5 रंगो वाली) और लहरिया पगड़ी बांधते हैं।

- **कुर्ता**

शेखावाटी क्षेत्र में पारम्परिक पुरुष ऊपरी शरीर पर कुर्ता पहनते थे, यह कुर्ता लम्बी आस्तिन का हुआ करता था जिस पर सिधे हाथ की तरफ एक जेब बनी रहती थी इसकी लम्बाई घुटनो तक हुआ करती थी। कुर्ता हमेशा सफेद रंग का पहना जाता था।

- **धोती**

धोती शरीर के निचले भाग को ढकने के लिए कुर्ते के निचे पहनी जाती थी यह 4–5 मीटर कपडे का बिना सिला, सफेद सूती वस्त्र हुआ करता था। जिसे लपेटकर बांधा जाता था।

- **जुतियाँ**

पैरों में चमड़े की जुतियॉ पहनी जाती थी। इन पर कढ़ाई की होती थी। पारम्परिक जुतियों केवल भूरे व काले रंग में ही हुआ करती थी।

पुरुषो के आभूषण

शेखावाटी क्षेत्र के पारम्परिक पुरुष कानो में सोने की मुर्की, गुर्दा और सॉकली पहना करते थे।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि जाट महिलाओं की वेशभूषा में ओढ़नी का बहुत महत्त्व है, यह स्त्री के जीवन के विभिन्न पडावों (जैसे विवाह और मातृत्व) का प्रतीक मानी जाती है, जहाँ पिला पोमचा और लाल चुनड़ी जैसी ओढनियॉ गहरे पारिवारिक रिश्तो को दर्शाती हैयह शोध पारम्परिक 'कच्ची गोटा–पत्ती' के कार्य और हस्तशिल्प तकनीक को भी दर्शाता है जो इस क्षेत्र की कलात्मक धरोहर है। पुरुषों में पगड़ी (पचरंगी और लहरिया) सामाजिक प्रतिष्ठा और जातीय पहचान का प्रमुख भाग है। परन्तु वर्तमान में आधुनिकता के प्रभाव से पुरुषों की दैनिक वेशभूषा में बदलाव आया है, लेकिन महिलाओं की वेशभूषा और पारम्परिक आभूषणों में निरंतरता बनी हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नीरज, ज.स., एवं शर्मा, भ. ल. (2018) राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. राजाराम, कल्पना (सम्पा.) (2012) भारतीय सस्कृति नई दिल्लीः स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि.।
3. भण्डारी, व. (2005) कॉस्ट्यूम, टेक्सटाइल्स एंड ज्वेलरी ऑफ इंडियाः ट्रेडिशन्स इन राजस्थान, प्रकाश बुक्स।
4. कुलश्रेष्ठ, स. (2017) कॉस्ट्यूम्स ऑफ राजस्थान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
5. कानूनगो, का. रा. (1925) हिस्ट्री ऑफ द जाट्सः ए कॉन्ट्रिब्यूशन टू द हिस्ट्री ऑफ नॉर्थर्न इंडिया. एम. सी. सरकार एवं संस।
6. सूद, र. क., और पंत, स. द इन्फ्लुएन्स ऑफ हिन्दी सिनेमा ऑन द साड़ी ब्लाउज।
7. सिन्हा, र., (2025) कल्चरल पैरलल्स इन कॉस्ट्यूम एण्ड ज्वैलरी अ कॉम्पेराटीव स्टडी ऑफ इण्डियनकालबेलिया एण्ड रोमा कम्यूनिटी, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च वन सोशल सांइस, 15(5)
8. कुमार, व., (1991) चैन्जिगं ट्रेन्डस इन कॉस्ट्यूमस ऑफ विश्नोई।
9. कौर, क. और अग्रवाल, अ. (2019), इण्डियन साड़ी : अपेराडिगम ऑफ ग्लोबल फैशन इन्फ्लुएस. इन्टरनेशनल जनरल ऑफ होम सांइस, 5 (2), 299–306

❑❑❑